व्यक्तित्व विकास में बाल साहित्य की भूमिका

–डॉ. अर्चना झा
हिन्दी विभाग
सेंट एन्स कॉलेज फॉर वूमेन्स

साहस के पुतले, बहादुरी की बातें, झोपडी से महल आदि उद्‌बोधन का कार्य करतीं है उन्हें प्रेरित करती है जीवन में कुछ कर पाने के लिए।
स्वर्ण सहोदर जिनकी बाल कविता में एक संदेश होता है।

–सब जल के ऊपर ठहर गई
हम लहर कई
हम इस तट पर हम उस तट पर
झटपट आ तट पर ठहर गई।

उपर्युक्त पंक्ति में लक्ष्य की सिद्धि समय पर कार्य करने से होती है यह दिखाया गया है।
धन्वंतरि की बाल कथाओं में जीवन का सत्य बोलता है। यह सत्य उनकी कहानी सतरंगी बॉसुरी, दो बैल आदि में चित्रित है।
मनोविज्ञान के अनुसार क्रियात्मक कौशल के विकास में अवसर, प्रोत्साहन अनुकरण का विशेष महत्व है जो व्यक्तित्व को संपूर्णता प्रदान करता है–बाल मनोविज्ञान की विशदझाँकी हमें बाल साहित्य के रचनाकारों में देखने को मिलती है। क्योंकि बच्चों को अपनी रूचि, व्यक्तित्व के अनुसार साहित्य की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र में उर्दू बाल साहित्य का अपना उल्लेखनीय स्थान है। गालिब का 'कादिरनामा' उल्लेखनीय स्थान है। अमीर खुसरो की मुकरियाँ और पहेलिया आज भी बच्चों की बुद्धि के विकास में सहायक है। ख्वाजा अलताफ हुसैन हाली का खुदा की शान में लिखा, नज्म बालकों में देशभक्ति जैसे मूल्यों की स्थापना करता हैं।
–तुम अगर चाहते हो मुल्क की खैर
न किसी हमवतन को समझो रौर।
मुल्क है इत्तफाक से आबाद
शहर है इत्तफाक से आबाद

इस्माइल मेंरठी जिनका बाल साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। उनका साहित्य व्यक्तित्व विकास एवं मूल्यों के संवर्द्धन में अपना निशिष्ट स्थान रखता है। इस संबंध में उनकी निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य है।
(1) बढ की सोहबत में मत बैठो, बढ का है अंजाम बुरा
बढ़ अच्छा बदनाम बुरा
(2) जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं
नाव कागज की सदा चलती नहीं
(3) बिठाते नहीं बेअदब को करीब
ये सच बात है बेअदब नसीब

खुशहाल जैदी एक ऐसे बाल साहित्यकार हैं जिन्होंने 13 वर्ष की अवस्था से ही बच्चों के लिए लिखना आरंभ कर दिया था। इन कहानियों में इन्होंने बच्चों के मनोविज्ञान का सूक्ष्म अंकन किया है। बच्चों की शैक्षणिक पुस्तकें भी लिखी।

कई लेखकों के बाल साहित्य में जहाँ एक तरफ बाल मनोविज्ञान और लोककथा का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी तरफ बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए यथार्थ तर्क युक्त विज्ञान कथाएँ भी लिखी। चांखेमयुम तोमची की कहानियों में इस तरह का चित्रण देखने को मिलता है। उस समय जब मनुष्य विज्ञान की तर्क जाल एवं वैज्ञानिक महत्वकांक्षी योजनाओं में नहीं उलझा था ऐसे में भी तोमची ने 'ग्रह-यात्रा' शीर्षक पुस्तक में बच्चों के लिए ऐसी कानियाँ लिखी जो उनके मस्तिष्क को 'तर्क' में उलझाता है विज्ञान संबंधी अन्वेषण की ओर प्रवृत्त करता है।

बंगला बाल साहित्य काफी समृद्ध है। इस साहित्य ने बच्चों के मानस में मनभावन रंग भरने हेतु चित्रांकन का भी प्रयोग किया। 'फेयरीटेल' की तर्ज पर परीकथाएँ 'नानसेंस राइम्स' के रूप में 'हजबटल' आदि ने बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन किया। सुकुमार राय के होनेहर बेटे सत्यजीत राय तथा लीला मजमुदार भी अल्प वय में ही बाल-साहित्य सृजन में लग गए और उन्होंने संदेश नामक बाल-पत्रिका निकाला इस पत्रिका ने बच्चों के मानस को परिपुष्ट किया। अनेक जासूसी कहानियाँ लिखी गयी ताकि उनके रोमांच, रहस्य उनके मस्तिष्क को उर्वर बना सके और वैसी परिस्थिति में निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर सके।

बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ उनमें मूल्यों का भी संवर्द्धन किस तरह करते हैं इसके संबंध मं समरेश बसु के आत्मकथा की पक्तियाँ द्रष्टव्य है।

ङ्गउनमें साहित्य के प्रति अनुराग तब जगा था जब वे ठाकुर घर (पूजाघर) में प्रसाद की आशा में बैठे व्रत कथा सुनते थे और रात को सोते समय दादी या माँ रूपकथाएँ सुनाती थी। आज भी अनेक साहित्यकार और आधुनिक लेखक आगे आने वाली पीढ़ी में से साहित्यकारों के निर्माण के लिख रहे हैं।

बाल-मन कच्ची मिट्टी हैं जिसे हम जो आकार देना चाहते हैं उन्हें सहज सरल रूप से दे सकते हैं उपदेशात्मक शैली में नहीं। आज के इस आधुनिक समय में Read Aloud Stories कहते हैं वह हमें गिजुभाई की कहानियों में देखने को मिलती हैं। जो पहले बच्चों को सुनाई जाती थी और सुनाने के बाद उन्हें प्रकाशित करते थे जिसमें मनोरंजन के साथ उपदेशरहित संदेश, समझ-बूझ, ज्ञान-विज्ञान है।

गुजरात के विख्यात कवि और कहानीकार झवेरचंद मेघा जिनकी कहानियों में शौर्य है तेज है जिन्दगी की उमंग है तरंग है तथा साथ ही साथ इसमें भारतीय संस्कृति की सुवास है जो व्यक्तित्व को आकार देता है मानस को परिपुष्ट कर मूल्यों को सहेजता है। उनके कहानी संग्रह है-कुर्बानी की कथाएँ किशोर कथाएँ आदि। चंदामामा और चंपक के गुजराती संस्करण आज भी हैं, जो बच्चों के भावों एवं विचारों को जाग्रत करता है।

बाल कविताएँ सीधे बच्चों के हृदय को छूती है। उन्हें प्रेरित करती है जीवन के लिए, दुख में भी सुख की अनुभूति के लिए। सकारात्मकता के भाव भरतीं है असफल निराश मन में इस संबंध में। भारती जी की ये पंक्तियाँ मजबूर करती हैं खुद को तलाशने की।

'जो लू लपट सहन कर लेते,
जीवन-रस पाते।
जो छाया में गए बैठ
बस बैठे रह जाते'

बाल काव्य रचने वाले कवियों ने प्रकृति के माध्यम से जीवन के विविध रंगों को उकेरा है। उन्होंने समझाने का प्रयत्न किया है कि, परिवर्तन जीवन का नियम है।

'हर डाली है फूलों वाली।
काँटे करते हैं रखवाली
कोमल फूल, कठोर भूल है'
–विष्णु खन्ना नंदन–73

बाल कविताएँ केवल भावना प्रधान ही नहीं रहे वरन् वे सूचना परक भी है जो उनके बौद्धिक क्षमता को बाहर लाकर अपने परिवेश से जोड़ता है।

'पेड़ हमें देते हैं छाया
पेड़ हमें देते हैं फल
पेड़ हमें देते ऑक्सीजन
पेड़ बुलाते है बादल'
–बालस्वरूप राही

मूल्यों का संवर्द्धन करते हुए बाल कवि मनुष्य जीवन में मानवीयता एवं जीवन में बोली में मिठास के महत्व को दर्शाते हैं। ङ्गफलफ का मानवीकरण किया गया है।

अपने स्वर में मिश्री घोले
नहीं कहीं डाली से डोले।
अपने–अपने मुख से खोले,
हम मिठास को पाल रहे है
रस की बूँदे ढ़ाल रहे हैं।

जीवन का सत्य और ङ्गमूल्यफ बड़े ही सूक्ष्म तरीके से बाल कविताओं में चित्रित किये गये हैं। जो व्यक्तित्व को एक नया आयाम देता है।

युगीन परिवेश में हमारे पास साधन है, विशाल धरती है, चेतना है, ज्ञान है, विदया का प्रचार है प्रसार है परंतु इन सबके होते हुए भी हमारी चेतना आज मिथ्याडंबर दिखावा छल–बल से भरा पड़ा है। ज्ञान का सूरज आज बंदी है अज्ञानता के अंधकार में। विद्या आज व्यवसाय बन चुका है। ऐसे में भारत के भावी कर्णधारों को एक दिशा देने की जरूरत है। यह दिशा बाल साहित्य के द्वारा दी जा सकती है। नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षाप्रद कहानियों, कविताओं के माध्यम से सद्वृत्तियों का, मानवीय गुणों कर विकास कर उन्हें एक सुयोग्य नागरिक बनाया जा सकता है। परंतु आजकल पारिवारिक विघटन की त्रासदी में कहानी वाचन लगभग समाप्त हो चुका है। ऐसे संक्रमण के समय में भी 'आकाशवाणी' के प्रत्येक केंद्र से कुछ ऐसे बाल कार्यक्रम जो उनके व्यक्तित्व में सहायक है प्रसारित हो रले हैं जैसे–बालगोपाल, बगिया के फूल, नन्हे–मुन्ने आदि नामों से प्रसारित हो रहे हैं। 'इन्हें भी जाने कार्यक्रम में सरकारी प्रष्ठिानों की जानकारी दी जाती है तो घटना–चक्र के अंतर्गत देश–विदेश, खेल–विज्ञान विषयक जानकारी भी प्रस्तुत की जाती है। जिसमें वार्ता, रूपक, संगीत रूपक आदि विधा का उपयोग किया जाता है। बच्चों की कल्पना को उर्वर बनाने तथा बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने, रचनात्मक क्षमताओं का विकास करने की दृष्टि से रेडियो एक सशक्त माध्यम है। बच्चों को नैतिक और चारित्रिक गुणों के प्रति आस्थावान बनाने तथा अपनी मूल्यों परंपराओं के निर्वहन, पर्यावरण परिवर्तन के प्रति सजग बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बच्चों का सार्थक, सर्वांगीण विकास हो, इसके लिए आवश्यक है बालोपयोगी साहित्य केवल उपदेशात्मक न हो बल्कि उसमें स्वस्थ

मनोरंजन भी हो। जिसकी छटा हमें विक्रम बेताल, स्कूल डेज, केक पैक, जंगल बुक, डक टेल्स आदि में देखने को मिलते हैं।

महापुरुषों की जीवनियों पर आधारित कहानी नाटक, वार्त्ता आदि बच्चों में समाज सेवा, देश प्रेम, वीरता साहस, निडरता, कर्त्तव्य निष्ठा आदि के भाव भरते हैं।

जमीन पर खड़े होकर आकाश का अध्ययन किया जा सकता है शर्त्त है पाँव, धरती पर टिके हो, दृष्टि सजग एवं सतर्क हो। बाल कहानियाँ देशज होकर भी अंतर्राष्ट्रीय महत्व रखती है। एक ही कहानियाँ कई भाषाओं में कहीं जाती है। कहानी के पंछी बालमानस के क्षितिज को छूते है। और निर्बंध उड़ते हैं। बाल कहानियों के कथा-विहग हैं, जो मूलतः हमारी संस्कृति हमारी भाषा लेकर यत्र-तत्र-सर्वत्र, पाये गये हैं। 'उठ जाग मुसाफिर भोर मई अब रैन कहाँ जो सोवत है सो खोवत है। सबेरे उठने की यह सीख बालक की मानसिकता को प्रभावित करता है। 'नंदन' पत्रिका में छपी 12 वर्ष की प्रतीक्षा राव की कविता की पंक्ति :

उठो सवेरे मेरे साथियों एक नया युग लाना है।

बुद्ध और गाँधी का अहिंसा सन्देश विश्व में हमें पहुँचाना है। दूसरी तरफ मानसी गौनियाल (14 वर्ष) लिखती हैं।

पुस्तक ही माँ है मेरी, अच्छी बातें सिखलाती
पिता की तरफ यह सन्मार्ग मुझे दिखलाती
विदया धन सबसे बड़ा काम न आये दूजा
पढ़े-लिखे मानव की होती पूजा।

बहुरंगी संदेश प्रढ बाल साहित्य ने बालकों को आकर्षित किया अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर **हीरों का हार** (जयप्रकाश भारती) **मैत्री का पुल** (स्लोवाक कथाएँ) (शारदा यादव) **कोरियाई लोक कथाएँ** (दिविक रमेश) आदि के साथ-साथ भारत में बाल पाठक बड़ी संख्या में निर्मित करने का श्रेय रंग-बिरंगी सोवियत पुस्तकों को जाता है। रामसरस्वती का 'भीम परित्रफ बच्चों में काफी लोकप्रिय हुआ। प्रसिद्ध समाचार पत्र असम ट्रिब्यून, दैनिक असम आदि में बालकों के नियमित स्तंभ छपते हैं। असम प्रकाशन परिषद ने पौराणिक ग्रंथों पर आधारित पुस्तकें **पंचतंत्र, हितोपदेश कथासरितसागर** आदि सचित्र पुस्तक बालकों में नैतिक विकास हेतु छपना शुरू किया है।

इन सबके होते हुए भी आज बाल साहित्य संक्रमण की जिस स्थिति से गुजर रहा है। वह, स्वयं में एक प्रश्न है जिसका उत्तर आज हमें ढूंढने हैं। बाल-साहित्य के प्रति साहित्यकारों की उदासीनता, प्रकाशकों के उपक्षित भाव सामाजिक परिवेश में कथावाचन की लोप हुई संस्कृति, जो आज फेसबुक, वाट्सप, टीवी के सम्मोहक जाल, एकल परिवार में उलझकर रह गया है। ऐसे में भले ही रंग-बिरंगी कॉमिक्स, स्पाइडर मैन, ही-मैन, शक्तिमान आदि अपनी जादू बिखरे रहे हो परंतु मन-मस्तिस्क को जागृत कर उनमें सात्विक मानवीय भाव भरने में नई चेतना जगाने में असमर्थ हैं। ऐसे में एकबार हमें बाल-साहित्य की भाव-भूमि को उर्वर बना उस पर, कथाओं के माध्यम से रीति-नीति, मूल्य, आचार-विचार, संस्कार के बीज डालने होंगे।

किसी ने सच ही कहा हैः-

संवेदना जगाने को एक चुभन काफी है,
धरा दुलारने को एक गगन काफी है।
निराशा के इस दौर में एक दीप तोजलाओ
अंधेरा मिटाने को एक किरण काफी है।